हिन्दी एकांकी एवं डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल

राज कुमार पाण्डेय
शोध छात्र, हिन्दी विभाग
शिबली नेशनल पी0जी0 कालेज, आजमगढ़ (उ0प्र0)

सारांश

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल का साहित्यिक जीवन इलाहाबाद से आरम्भ होता है। ताजमहल के आँसू' एकांकी में डॉ0 लाल को एक पहचान मिली। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र थे, जहाँ वे डॉ0 रामकुमार वर्मा के सीधे सम्पर्क में थे। डॉ0 लाल, डॉ0 वर्मा से एकांकी लेखन के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रभावित हैं। वे विदेशी साहित्यकारों के अनुकरण के विरोधी हैं। वे मौलिकता और नवीनता पर जोर देते हैं। अपने एकांकीलेखन के लगभग 22 वर्ष उपरान्त उन्होंने अपने श्रेष्ठ एकांकियों का संग्रह 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी' (सन् 1972 ई0) नाम से निकाला। डॉ0 लाल को निर्भीक साहित्यकार माना जा सकता है। उन्होंने आपातकाल (सन् 1975–1977 ई0) का विरोध किया। इसके लिए उन्होंने एकांकियों का भी सृजन किया, उनका मंचन कराया। इन एकांकियों का संग्रह 'खेल नहीं नाटक' नाम से सन् 1978 ई0 में प्रकाशित हुआ।

वैसे तो डॉ0 लाल ने सभी प्रकार के एकांकियों का सृजन किया है, किन्तु लेखन के आरंभिक वर्षों में उनकी रूचि ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों में अधिक थी। रंगमंच के अतिरिक्त उन्होंने रेडियो एवं दूरदर्शन के लिए भी एकांकी नाटक लिखे हैं। वे नाटककार होने के साथ ही साथ एक कुशल अभिनेता और निर्देशक के रूप में जाने गये हैं।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
राजकुमार पाण्डेय

हिन्दी एकांकी एवं डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

शोध मंथन, मार्च 2018,
पेज सं0 112–118

Article No. 17
http://anubooks.com
?page_id=581

हिन्दी एकांकी विकास के तीन चरण माने गये हैं। इसका आरम्भ अव्यवस्थित रूप में ही सही भारतेन्दु काल में हुआ। एकांकी विकास का दूसरा चरण सन् 1929 ई0 से आरम्भ होता है, जब जयशंकर प्रसाद की एकांकी 'एक घूँट' प्रकाशित होती है। विकास का तीसरा चरण सन् 1938 ई0 हंस के 'एकांकी नाटक विशेषांक' से प्रारम्भ होता है। इस चरण में डॉ0 रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर प्रसाद, उपेन्द्रनाथ अश्क, जगदीश चन्द्र माथुर, विष्णु प्रभाकर, प्रभाकर माचवे, विनोद रस्तोगी आदि ने कई महत्वपूर्ण एकांकियों का सृजन किया है। डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल स्वातंत्र्योत्तर एकांकीकार हैं। उन्होंने सन् 1946–47 से लेखन कार्य आरम्भ किया, लेकिन एक व्यवस्थित साहित्यकार के रूप में सन् 1950 में सामने आये ।

डॉ0 लक्ष्मीनारायन लाल समकालीन एकांकीकारों से अलग हैं। उनके समय के कई एकांकीकार फ्रायड के दर्शन का अनुकरण कर रहे थे किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपने एकांकियों के विषयवस्तु को देश की सभ्यता, संस्कृति एवं समस्या से सम्बद्ध किया। अधिकांश एकांकी लेखक अपने एकांकियों का शिल्प पाश्चात्य तकनीक के अनुरूप रख रहे थे, वहीं डॉ0 लाल ने 'लोक–नाट्य शैली' के अनुरूप एकांकियों का सृजन किया। 'लोक नाट्य शैली' को लेकर उन्होंने कई प्रयोग किये। इसकी प्रेरणा उनको रामलीला और रासलीला से मिली। बचपन में वे रामलीला और रासलीला खूब देखा करते थे। आगे चलकर उनका यह शौक उन्हें 'लोक–नाट्य' की कला को समझने में सहायक सिद्ध हुआ। इसके परिणाम स्वरूप डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल की एकांकियाँ जीवंत एवं प्रभावशाली हैं और हिन्दी एकांकी के क्षेत्र में वे एक अलग पहचान रखते हैं।

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल का साहित्यिक जीवन इलाहाबाद से आरम्भ होता है। ताजमहल के आँसू' एकांकी में डॉ0 लाल को एक पहचान मिली। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र थे, जहाँ वे डॉ0 रामकुमार वर्मा के सीधे सम्पर्क में थे। डॉ0 लाल, डॉ0 वर्मा से एकांकी लेखन के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रभावित हैं। वे विदेशी साहित्यकारों के अनुकरण के विरोधी हैं। वे मौलिकता और नवीनता पर जोर देते हैं। अपने एकांकीलेखन के लगभग 22 वर्ष उपरान्त उन्होंने अपने श्रेष्ठ एकांकियों का संग्रह 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी' (सन् 1972 ई0) नाम से निकाला। डॉ0 लाल को निर्भीक साहित्यकार माना जा सकता है। उन्होंने आपातकाल (सन् 1975–1977 ई0) का विरोध किया। इसके लिए उन्होंने एकांकियों का भी सृजन किया, उनका मंचन कराया। इन एकांकियों का संग्रह 'खेल नहीं नाटक' नाम से सन् 1978 ई0 में प्रकाशित हुआ।

वैसे तो डॉ0 लाल ने सभी प्रकार के एकांकियों का सृजन किया है, किन्तु लेखन के आरंभिक वर्षों में उनकी रूचि ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों में अधिक थी। रंगमंच के अतिरिक्त उन्होंने रेडियो एवं दूरदर्शन के लिए भी एकांकी नाटक लिखे हैं। वे नाटककार होने के साथ ही साथ एक कुशल अभिनेता और निर्देशक के रूप में जाने गये हैं।

हिन्दी एकांकी विकास के तीन चरण माने गये हैं। इसका आरम्भ अव्यवस्थित रूप में ही सही भारतेन्दु काल में हुआ। एकांकी विकास का दूसरा चरण सन् 1929 ई0 से आरम्भ होता है, जब जयशंकर प्रसाद की एकांकी 'एक घूँट' प्रकाशित होती है। विकास का तीसरा चरण सन् 1938 ई0 हंस के 'एकांकी नाटक विशेषांक' से प्रारम्भ होता है। इस चरण में डॉ0 रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर प्रसाद, उपेन्द्रनाथ अश्क, जगदीश चन्द्र माथुर, विष्णु प्रभाकर, प्रभाकर माचवे, विनोद रस्तोगी आदि ने कई महत्वपूर्ण एकांकियों

का सृजन किया है। डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल स्वातंत्र्योत्तर एकांकीकार हैं। उन्होंने सन् 1946–47 से लेखन कार्य आरम्भ किया, लेकिन एक व्यवस्थित साहित्यकार के रूप में सन् 1950 में सामने आये ।

डॉ0 लक्ष्मीनारायन लाल समकालीन एकांकीकारों से अलग हैं। उनके समय के कई एकांकीकार फ्रायड के दर्शन का अनुकरण कर रहे थे किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपने एकांकियों के विषयवस्तु को देश की सभ्यता, संस्कृति एवं समस्या से सम्बद्ध किया। अधिकांश एकांकी लेखक अपने एकांकियों का शिल्प पाश्चात्य तकनीक के अनुरूप रख रहे थे, वहीं डॉ0 लाल ने 'लोक–नाट्य शैली' के अनुरूप एकांकियों का सृजन किया। 'लोक नाट्य शैली' को लेकर उन्होंने कई प्रयोग किये। इसकी प्रेरणा उनको रामलीला और रासलीला से मिली। बचपन में वे रामलीला और रासलीला खूब देखा करते थे। आगे चलकर उनका यह शौक उन्हें 'लोक–नाट्य' की कला को समझने में सहायक सिद्ध हुआ। इसके परिणाम स्वरूप डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल की एकांकियाँ जीवंत एवं प्रभावशाली हैं और हिन्दी एकांकी के क्षेत्र में वे एक अलग पहचान रखते हैं।

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल का एकांकी लेखन उनके विद्यार्थी जीवन से प्रारम्भ होता है। उनकी प्रथम एकांकी 'ताजमहल के आँसू' इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मैगजीन में प्रकाशित हुई। विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव के लिए उनके इसी एकांकी का चयन किया गया। उनके लिए बड़ी बात थी, क्योंकि विश्वविद्यालय में हर वर्ष डॉ0 रामकुमार वर्मा के एकांकी का मंचन किया जाता था। डॉ0 वर्मा डॉ0 लाल के गुरू थे। 'ताजमहल के आँसू' एकांकी के मंचन के समय डॉ0 लाल के साथ मुख्य अतिथि के रूप में श्री ए0एन0 झा बैठे हुए थे। ये वही झा साहब थे, जिन्होंने डॉ0 लाल को विश्वविद्यालय में प्रवेश दिलवाया था।

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल का पहला एकांकी संग्रह 'ताजमहल के आँसू' नवम्बर सन् 1950 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह को उन्होंने डॉ0 रामकुमार वर्मा को समर्पित किया है। इस संग्रह में उनकी ऐतिहासिक एकांकियाँ संकलित हैं। डॉ0 लाल को डॉ0 रामकुमार के साथ–साथ लक्ष्मीनारायण मिश्र भी प्रभावित करते हैं। डॉ0 लाल ने 'ताजमहल के आँसू' संग्रह में लिखा है – "मैं डॉक्टर रामकुमार वर्मा को ऐतिहासिक एकांकी–जगत का सबसे बड़ा टेक्नीशियन मानता हूँ। उनका यह व्यक्तित्व इतने गौरव का है कि इसके प्रकाश में कितने आगे आने वाले नाटककारों की कला निखर सकेगी। यथार्थवादिता की दिशा में पूज्य लक्ष्मीनारायण मिश्र जी का व्यक्तित्व मुझे बहुत प्यारा लगा है।"1 'ताजमहल के आँसू' संग्रह के एकांकी आल इन्डिया रेडियो के विभिन्न स्टेशनों से प्रसारित भी हो चुके हैं।

डॉ0 लाल अपने दूसरे संग्रह 'पर्वत के पीछे' मार्च, 1952 में सामाजिक यथार्थ की ओर आकर्षित होते हैं। इस संग्रह की 'पर्वत के पीछे' और 'मड़वे का भोर' दोनों एकांकी बहुत ही प्रभावशाली हैं। 'मड़वे का भोर' आगे चलकर उनके 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी' में भी संकलित हुआ है। 'पर्वत के पीछे' संग्रह में डॉ0 लाल का यथार्थ के प्रति प्रेम स्पष्ट दिखाई पड़ता है। वे लिखते हैं, "मैं भी ऐसे ही नाटक लिखना चाहता हूँ, जिनमें कोई बदसूरत बेनक़ाब कर दी गई हो, कोई घिनौना नासूर–घाव साफ करके दिखा दिया गया हो; स्वप्न में रोते हुए इंसान के आँसुओं को मूर्त कर दिया गया हो, उदास होठों पर न जाने कब की सूखी हुई मुस्कुराहट प्यार देकर या थप्पड़ मारकर जगा दी गई हो !"2

डॉ0 लाल का तीसरा एकांकी संग्रह 'नाटक बहुरंगी' सन् 1961 ई0 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में कुल बारह एकांकी नाटक हैं, जिसमें 'मम्मी ठकुराइन' एक श्रेष्ठ सामाजिक एकांकी है। डॉ0 लाल ने 'मम्मी ठकुराइन' को अपने 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी' में भी स्थान दिया है। इस समय पश्चिम की तर्ज पर हमारे यहाँ भी एकांकी नाटक लिखे जा रहे थे। यह हिन्दी एकांकी के विकास में किसी भी दृष्टि से सहयोगी कदम नहीं था। डॉ0 लाल के अनुसार – "..... हमारी दूसरी प्रेरणा–भूमि पश्चिम के आधुनिक–समसामयिक एकांकी हैं। उनकी एकांकी कला के नये–नये शिल्प विधानों और स्वरूपों से प्रेरित होकर हम हिन्दी एकांकी को विकास पथ पर अग्रसर करने लगते हैं। वस्तुतः तब वह 'विकास' नहीं होता महज 'प्रसार' होता है। क्योंकि तब स्वभावतः प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष ढ़ंग से छनकर या छाया डालकर वे ही विदेशी विषय, तत्स्वरूप वही चरित्र, वही नाट्य–स्थिति वही नाट्य–तत्त्व हमारे एकांकी में आ जाते हैं।"3 पर ऐसा नहीं कि सभी एकांकीकार अन्धानुकरण कर रहे थे। डॉ0 लाल के साथ–साथ कई ऐसे रचनाकार थे, जिनका जोर मौलिकता और नवीनता पर था। डॉ0 लाल ने इसका उल्लेख करते हुए 'नाटक बहुरंगी' में लिखा है – "..... डॉ0 रामकुमार वर्मा के 'रिमझिम' एकांकी संग्रह के नये हास्य एकांकी, जगदीश चन्द्र माथुर के कुछ नटखट एकांकी 'ओ मेरे सपने' में, धर्मवीर भारती का 'नीली झील' एकांकी। इन सब एकांकियों के रंग विधान में मौलिकता, नयापन तो है ही, इसके अतिरिक्त इनमें एक नयी बात है इनका सूक्ष्म रंगमंच तत्व, जो निश्चय ही पश्चिम के आधुनिक रंगतत्त्वों से ये अपने को भिन्न सिद्ध करते हैं।"4

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल का चौथा एकांकी संग्रह – 'नाटक बहुरूपी' सन् 1964 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल ग्यारह एकांकियाँ संकलित हैं। 'बादल आ गये' और 'बसन्त ऋतु का नाटक' दो ऐसे एकांकी हैं, जो 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी' में संकलित हैं। ये दोनो वास्तव में डॉ0 लाल के श्रेष्ठ एकांकियों में हैं।

'दूसरा दरवाजा' एकांकी संग्रह सन् 1972 में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में कुल छः एकांकियाँ हैं। 'काफी हाउस में इंतजार' इस संग्रह की श्रेष्ठ एकांकी है। इस संग्रह में डॉ0 लाल ने 'मेरा अपना रंगमंच' शीर्षक से अपना रंगमंच विषयक विचार प्रकट किया है।

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के पसंदीदा एकांकियों का संग्रह – 'मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी' सन् 1972 में दिखाई पड़ता है। इस संग्रह में उनके एकांकी विकास यात्रा के सभी पक्षों को देखा जा सकता है। 'गाँव का ईश्वर', 'मड़वे का भोर', 'वरूण वृक्ष का देवता', 'बादल आ गये', 'मम्मी ठकुराइन', 'बसन्त ऋतु का नाटक', 'काफी हाउस में इंतजार' ये डॉ0 लाल द्वारा सन् 1972 तक लिखे गये एकांकियों में श्रेष्ठतर हैं।

'खेल नहीं नाटक' (सन् 1978) आपात काल में लिखे गये एकांकियों का संग्रह है। इसमें कुल आठ एकांकियाँ संकलित हैं। सन् 1977 के चुनाव में इस संग्रह के कई एकांकी जनता के बीच खेले गये। इस सम्बन्ध में डॉ0 लाल ने लिखा है – "'नहीं' और 'क्रिकेट' एक स्थान पर मैंने स्वयं बिना कुछ बोले, केवल इशारों और अभिनटन (माइम) द्वारा प्रस्तुत किया है। 1977 के चुनाव–मंच पर 'क्रिकेट' हजारों लोगों के सामने खेले गए हैं।"5 'खेल नहीं नाटक' संग्रह को डॉ0 लाल ने भूमिगत रहते हुए लिखा था।

भूमिगत ढंग से ये नाटक खेले गये थे। इन नाटकों को खेलने में युवा अभिनेता और निर्देशकों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। दिल्ली के कई कालेजों के छात्रों ने भी इन नाटकों को मंचित किया।

नया तमाशा' (सन् 1982) डॉ0 लाल का आठवाँ प्रकाशित एकांकी संग्रह है। डॉ0 लाल की समस्त एकांकियों को 'लक्ष्मीनारायण लाल एकांकी रचनावली' के अन्तर्गत संकलित किया गया है। यह संकलन दो भागों में सन् 1991 में प्रकाशित हुआ है।

डॉ0 लाल के एकांकी संग्रहों से स्पष्ट है कि पहले उनकी रूचि ऐतिहासिक एवं पौराणिक विषयों में अधिक थी। पर बाद में उन्होंने समाज से जुड़ी हुई समस्याओं को अपने एकांकियों का विषय बनाया है। डॉ0 सिद्धनाथ कुमार ने सत्य ही लिखा है – "डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल ने पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक, सब प्रकार के नाटक लिखे हैं। प्रारम्भ में इनकी रूचि पौराणिक और ऐतिहासिक नाटकों की ओर विशेष रूप से थी, पर बाद में ये सामाजिक यथार्थ के निकट आते गये हैं।"6

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल मात्र नाटककार नहीं हैं, बल्कि एक कुशल अभिनेता और निर्देशक भी हैं। उन्हें यह ज्ञात है कि नाटक या एकांकी को रंगमंच पर प्रस्तुत करने में क्या–क्या समस्याएँ आ सकती हैं। वे नाटक और रंगमंच को एक–दूसरे से पृथक नहीं मानते हैं। डॉ0 लाल के इस कार्य का उल्लेख करते हुए नरनारायण राय ने लिखा है –"हिन्दी रंगमंच जो भारतेन्दु युग के बाद से ही एक बार फिर से नाटक और जीवन दोनों से ही कट गया था, उसे फिर से एक बार परस्पर सम्बद्ध करने की एक जिम्मेवार कोशिश डॉ0 लाल की ओर से व्यक्त की गयी है।"7 डॉ0 लाल की इस विशेषता के कारण ही उनके एकांकी रंगमंच पर बहुत सफलता से मंचित किये जा सके हैं।

डॉ0 लाल ने रंगमंच के साथ–साथ रेडियो के लिए भी एकांकी लिखे हैं। अपने पहले एकांकी संग्रह 'ताजमहल के आँसू' में उन्होंने लिखा है, "संग्रह के अधिकांश नाटकों को आल इन्डिया रेडियो के इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली, पटना स्टेशनों से प्रसारित होने का सौभाग्य मिल चुका है।"8 'मीनार की बाँहें', 'ठण्डी छाया', 'एक औसत आदमी', 'गुप्त धन', 'अब और नहीं', 'बाहर का रास्ता', 'आइना देख अपना', 'खुशबू', 'नमक और पानी', 'शरणागत' आदि एकांकियाँ डॉ0 लाल द्वारा रेडियों के लिए लिखी गयी हैं। 'शरणागत' तो रेडियो नाट्य प्रतियोगिता में पुरस्कृत हो चुका है। रेडियो के अतिरिक्त डॉ0 लाल ने दूरदर्शन के लिए भी एकांकी नाटक लिखे हैं। 'कुछ और कुछ', 'हाय अंकल !', 'चोर–चोर बहन भाई', 'क्यू में' आदि उनकी दूरदर्शन के लिए लिखी गयी एकांकियाँ हैं।

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल ने एकांकी के क्षेत्र में प्रवेश किया उस समय डॉ0 रामकुमार वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, लक्ष्मीनारायण मिश्र, जगदीश चन्द्र माथुर आदि की एकांकियों का प्रचलन अधिक था। डॉ0 लाल ने इनके साथ लिखना प्रारम्भ किया और आगे चलकर मोहन राकेश, डॉ0 धर्मवीर भारती, विनोद रस्तोगी, जैसे युवा नाटककारों के साथ हिन्दी एकांकी की विकास यात्रा को आगे बढ़ाया। यदि यह कहा जाए कि हिन्दी एकांकी के विकास में डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल का योगदान बहुत अधिक है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति न होगी। उन्होंने समकालीन एकांकी को एक दिशा प्रदान की है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी एकांकी का आरम्भ, अव्यवस्थित रूप में ही सही, भारतेन्दु काल में हुआ। इस युग में एकांकी का शिल्प अस्पष्ट था। वह संस्कृत के रूपकों तथा उपरूपकों पर अधिक

आश्रित थी। इस काल के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सर्वाधिक समर्थ रचनाकार कहे जा सकते हैं उनकी प्रेरणा और उचित मार्गदर्शन के कारण ही अन्य नाटककारों, जैसे– प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, राधाकृष्ण दास, राधाचरण गोस्वामी आदि ने कई अच्छे रूपक और उप–रूपक लिखें जो एकांकी की श्रेणी में आते हैं। भारतेन्दु युग के रचनाकारों के उद्देश्य उनकी रचनाओं में स्पष्ट दिखाई पड़ते है, यह बात एकांकियों के विषय में भी कही जा सकती है। ये एकांकियाँ समाज सुधार के लिए भी लिखी गई हैं। इनको देखते हुए कुछ आलोचक इनके ऊपर उपदेशात्मक होने का आरोप लगाते हैं, जो सत्य है। एकांकी विकास के प्रथमावस्था के उत्तरकाल में जयशंकर प्रसाद, जी0पी0 श्रीवास्तव, बेचन शर्मा 'उग्र' आदि ने लिखना प्रारम्भ किया। इनमें जयशंकर प्रसाद का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। जी0पी0 श्रीवास्तव ने अपनी एकांकियों द्वारा हास्य उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। प्रथम चरण के अन्तिम समय में हिन्दी एकांकियों के ऊपर संस्कृत का प्रभाव कम होने लगा था।

सन् 1929 में एकांकी के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा। यह परिवर्तन शिल्प के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। हिन्दी एकांकी पश्चिमी नाटककारों एवं दार्शनिकों के विचारों से प्रभावित होने लगी। भुवनेश्वर प्रसाद के 'कारवाँ' (सन् 1935) एकांकी संग्रह में इसकी चरम परिणति दिखाई पड़ती है। भुवनेश्वर ने वस्तु और शिल्प दोनों को ही पश्चिम से ग्रहण किया है। डॉ0 रामकुमार वर्मा, गणेश प्रसाद द्विवेदी, उदयशंकर भट्ट, जगदीश प्रसाद माथुर, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि एकांकीकारों ने अपना एकांकी लेखन सन् 1929 के बाद और एकांकी विकास यात्रा के द्वितीय चरण में प्रारम्भ किया। जयशंकर प्रसाद का 'एक घूँट' (सन् 1929) हिन्दी की प्रथम एकांकी रचना है और यहीं से हिन्दी एकांकी की दूसरी विकास यात्रा का प्रारम्भ होता है। इसी रचना से आधुनिक हिन्दी एकांकी का उद्भव माना जाता है।

हंस का एकांकी नाटक विशेषांक (मई, सन् 1938) एकांकी विधा के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इसके महत्व को देखते हुए ही सन् 1938 से हिन्दी एकांकी के विकास का उत्कर्षकाल माना जाता है। इस विशेषांक में एकांकी विधा के अस्तित्व के सम्बन्ध में प्रश्न खड़े हुए और उनका निराकरण भी किया गया। अब हिन्दी एकांकी को एक स्वतन्त्र विधा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। इस चरण में डॉ0 रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर प्रसाद, उपेन्द्रनाथ अश्क, उदयशंकर भट्ट, जगदीश चन्द्र माथुर, विष्णु प्रभाकर, प्रभाकर माचवे, विनोद रस्तोगी आदि ने महत्वपूर्ण एकांकियों का सृजन किया। इस चरण के एकांकीकार एकांकी–कला से पूर्णतः अवगत हो चुके हैं। उत्कर्ष काल में मनोवैज्ञानिक आधार पर चरित्रों का निर्माण किया जा रहा है। एकांकी लेखकों ने फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के अनुकूल भी एकांकी लिखे हैं। अब समस्या प्रधान एकांकियों का निर्माण कई आधुनिक एकांकीकार कर रहे हैं। आधुनिक एकांकीकारों का झुकाव यथार्थवाद की ओर अधिक है।

निष्कर्ष

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल आधुनिक युग के एक सशक्त एकांकी लेखक हैं। उनकी विशेषता यह है कि वे आधुनिक होते हुए भी तथाकथित आधुनिक नहीं हैं। वे पश्चिम की अंधी दौड़ में सम्मिलित नहीं हैं। अपनी एकांकियों के शिल्प–निर्माण में उन्होंने कई प्रयोग किए हैं। इसी प्रकार का एक प्रयोग उन्होंने 'लोक–नाट्य–शैली' को लेकर किया है और उसमें सफलता प्राप्त की है। उनके 'नाटक

बहुरंगी' एकांकी संग्रह की अधिकांश एकांकियाँ इसी शैली के अनुकूल लिखी गई हैं। डॉ0 लाल अपने एकांकी लेखन के आरम्भ में डॉ0 रामकुमार वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, उपेन्द्रनाथ अश्क से प्रभावित हैं और उनके सदृश अपनी एकांकियों का शिल्प निर्धारित करते हैं। पर 'नाटक बहुरंगी' की सफलता ने उनको एक अलग पहचान दी और उन्होंने अपनी उत्तरवर्ती एकांकियों में विविध प्रयोग कर स्वयं को स्थापित किया। इस प्रकार के प्रयोग की प्रेरणा उनको रामलीला और रासलीला से मिली। डॉ0 लाल ने समृद्ध लोक–नाट्य को निकट से जाना था और उसके शिल्प के आधार पर कई एकांकियों का सृजन किया। ये एकांकियाँ कृत्रिमता से दूर हैं। यही कारण है कि डॉ0 लाल श्रेष्ठ एकांकीकारों की कतार में सम्मिलित हैं। हिन्दी एकांकी के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. लाल, डॉ0 लक्ष्मीनारायण, *'ताजमहल के आँसू' अमर प्रकाशन मन्दिर प्रयाग*, प्रथम संस्करण सन् **1950**, 'अपनी बात', **पृ0सं0 – 1–2.**
2. लाल, डॉ0 लक्ष्मीनारायण, *'पर्वत के पीछे' सेन्ट्रल बुक डिपो*, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण सन् **1952**, 'एक खत की याद', **पृ0सं0–2.**
3. लाल, डॉ0 लक्ष्मीनारायण, *' नाटक बहुरंगी' भारतीय ज्ञानपीठ वाराणसी,* द्वितीय संस्करण सन् **1964**, 'प्रस्तावना', **पृ0सं0–7.**
4. लाल, डॉ0 लक्ष्मीनारायण, *'नाटक बहुरंगी' भारतीय ज्ञानपीठ वाराणसी,* द्वितीय संस्करण सन् **1964**, 'प्रस्तावना', **पृ0सं0–8.**
5. लाल, डॉ0 लक्ष्मीनारायण, *'खेल नहीं नाटक' सरस्वती विहार,* दिल्ली, द्वितीय संस्करण सन् **1980**, 'आपातकाल में', **पृ0सं0–6.**
6. कुमार, डॉ0 सिद्धनाथ, *'हिन्दी एकांकी की शिल्पविधि का विकास'*, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण सन् **1978, पृ0सं0–231**.
7. राय, नरनारायण, *'नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल की नाट्य–साधना',* सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् **1979, पृ0सं0–174**
8. लाल, डॉ0 लक्ष्मीनारायण, *'ताजमहल के आँसू' अमर प्रकाशन मन्दिर प्रयाग,* प्रथम संस्करण सन् **1950**, 'अपनी बात', **पृ0सं0 –1.**

यह मेरा शोधपत्र अप्रकाशित एवं पूर्णतः मौलिक है।